१५ आक्टोंबर १९५६ बाबासाहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर का ऐतिहासिक नागपूर संबोधन

हम बौद्ध क्यों बनें?

बौद्ध धर्मानुयाइयो।

मै आज के अपने भाषण में इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर कि मैंने भगवान बुद्ध के चलाये हुए धर्म का पुनरुद्धार तथा प्रचार के महान् कार्यभार को अपने कंधों पर क्यो लिया है? अपने विचार प्रकट करना चाहता हूं. कई विचारशील व्यक्तियों का और मेरा अपना विचार है कि कल का धर्मान्तर समारोह आज होना चाहिए था और आज का यह धर्म परिवर्तन अभिभाषण धर्मान्तर समारोह से पूर्व कल होना चाहिए था. किन्तू जो होना था सो हुआ. अब आज इस प्रश्न पर विचार करना कोई महत्व नहीं रखता है.

बहुत से लोगो ने मुझ से यह प्रश्न किया है कि इस महान समारम्भ के लिए नागपूर ही क्यो चुना है अन्य कोई स्थान क्यो नहीं चुना? कुछ का कहना है कि इस शहर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सेना का केन्द्र होने के कारण उन्हीं की आंखों के सामनेकुछ करके दिखाने के लिए मैंने इस स्थान को चुना है. लेकिन यह बात सच नहीं है. मेरा ऐसा उद्देश्य नहीं है. नाक को खुजाकर किसी को भी अपशकून करने की मेरी कोई इच्छा नही है और न ही मेरे पास ऐसी निरर्थक बातें करने के लिए समय ही है. जो महान कार्य मैने अपने कंधों पर लिया है वह इतना महत्वपूर्ण है कि उसके सम्बन्ध में एक मिनट भी मेरे लिए बडा महत्व रखता है. इस स्थान को चुनते समय कभी भूल से भी आर. एस. एस. का विचार मेरे मन में नही आया.

जिन लोगों ने बौद्ध धर्म के सम्बन्ध में इस देश के प्राचीनकाल के इतिहास को अध्ययन किया है उन्हे मालूम है कि भगवान् बुद्ध के धर्म को फैलाने का महान श्रेय नाग जाति के लोगों को है. नाग लोग आर्यों के कट्टर शत्रु थे. आर्यों और अनार्यो में आपस में कई बडी-बडी लडाइयां हुईं. आर्य लोग नाग लोगों का समूल नाश करना चाहे थे. इस विषय में बहुत सी कहानियां पुराणों में मिलती है. अर्जुन ने नागों को जलाया था. अगस्त मुनि ने एक ''सर्प'' नाग की रक्षा की थी. उसी के वंशज आप लोग है. जिन नागों को छल और कपट से पतित बनाया गया था, उन्हे उठाने के लिए एक महापुरुष की आवश्यकता थी और वे उन्हे भगवान बुद्ध के रुप में मिले. नागों ने ही सारे भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार किया. आप उन्हीं नागों की संतान है. वीर नागों की प्रमुख आबादी नागपुर में थी. नागों की आबादी के कारण इस नगर को नागपूर कहा गया है. इस नागपुर से २७ मील की दूरी पर बहने वाली नदी का नाम भी ''नाग'' पडा हुआ है. इससे ऐसा मालूम पडता है कि इसी नदी के आसपास नागों की आबादी थी. नागपूर को इस महान समारम्भ के लिए चुने जाने का कारण यही है. दुसरा कोई कारण

इसके पीछे नही है. इसलिए इसे कोई भी गलत न समझें. किसी और बात पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का विरोध सम्भव है लेकिन इस स्थान को किसी ने भी उनको चिढाने के लिए पसन्द नहीं किया है.

जिस महान कार्य को मैंने प्रारम्भ किया है और जिसे आप सब लोगों ने स्विकार किया है उसकी बहुत से समाचार पत्रों ने बहुत ही कटु आलोचना की है. उनके मतानुसार मैं अपने बंधुओं का गलत मार्ग पर ले जा रहा हूं. ये अस्पृश्य ऐसे ही अछूत बने रहेंगे. इस धर्मांतर से हमारा कुछ भी भला नही होगा. कई पत्रों ने तो यहां तक भ्रामक तथा मिथ्या बातें कही है कि आज जो अछूतों को राजनैतिक अधिकार मिले हूए है वे सब धर्मांतर से समाप्त हो जायेंगे. यह सब कुछ पागलपन का प्रचार है. उन लोगों का कहना है कि नये रास्ते से न जाकर पुराने रास्ते से या उसकी पगडंडी से ही हमें जाना चाहिए. सम्भव है कि ऐसे व्यक्तियों का थोडा सा प्रभाव हमारे तरुणों आर बुजुर्गो पर अवश्य पडे, इसलिए मैं इस प्रश्न का जवाब दिए बगैरे नहीं रहना चाहता. संशय को दूर करने से हमारे आंदोलन को बल मिलेगा. इसलिए इसी प्रश्न पर मैं बहुत कुछ कहना चाहता हूं.

''महार-चमार मरी हुई गाय -भैंसो को न उठाएं और न मरी हुई गाय भैसों के मांस को ही खाएं.'' इस बात का प्रचार मैंने आज से ३० वर्ष पूर्व किया था. इस प्रचार से सवर्ण हिन्दुओं को बडा आघात पहुंचा. मैने उनसे पुछा कि गाय-भैसों का दूध तुम पिओ और इसके मरने पर उठाकर हम बाहर फेंके. ऐसा क्यों? अगर वे अपनी बूढी मां के मरने पर उसे खुद उठा ले जाते है तो मरी हुई गाय और भैंस को स्वयं क्यों नही उठा ले जाना चाहते? जब मैंने ऐसे प्रश्न उनके सामने रखे तो ये लोग बहुत चिढते. मैंने उनसे कहा कि अगर तुम अपनी मरी हुई मां को बाहर फेंकने के लिए हमें दे दो तो हम अवश्य ही मरी हुई गाय को भी उठा कर ले जायेंगे. इस पर 'केसरी' (ब्राम्हणों का समाचार पत्र) में एक चित्त पावन ब्राह्मण ने कई पत्र प्रकाशित करके यह बताने का प्रयत्न किया कि हर वर्ष मृत पशुओं को न उठाने से महार-चमारों को कितना नुकसान होगा. इसके लिए उन्होंने कई प्रकार के आंकडे देकर अपनी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया, उनका कहना था कि एक मेरे हुये पशु की हड्डी, दांतों, सींगों, अंतडियों आदि के बेचने से हर चमार को ५०० या ६०० रुपयों का वार्षिक लाभ होता है. अतः मै उसका नुकसान करा रहा हूं. मेरे अस्पृश्य लोगों को ऐसा लगा कि आखिर मैं अपने लोगों के लिए क्या करने जा रहा हूं. एक बार मैं संगमनेर (वर्तमान मैसोर प्रान्त में, वेलगांव का एक तहसील है) गया हुआ था, वहां पर जिसने 'केसरी' में पत्र प्रकाशित किये थे वह मुझ. से मिला. उसने वही प्रश्न दोहराये. मैंने उसको जवाब दिया कि तुम्हारे प्रश्नों का जबाब मैं समय आने पर दूंगा. मैने 'केसरी' में प्रकाशित हुए सभी पत्रों के प्रश्नों का खुली सभा में यों जवाब दिया कि मेरे लोगों के पास खाने के लिए कपडा नहीं है. रहने के लिए मकान नहीं है. उनके पास जोतने के लिए जमीन नहीं है. इसलिए वह दलित है. महा दुःखी है. मैंने इसके कारण सभी उपस्थित लोगों से पूछे. सभा में से किसी ने भी उत्तर नही दिया. यहां तक कि 'केसरी' में पत्र लिखने वाले सज्जन ने भी जो उस समय सभा में मौजूद थे, उसने भी जवाब नही दिया.

तब मैंने कहा, भले लोगों! हम अपने संबंध में खुद ही सोच लेंगे. अगर तुम्हे हमारे लाभ की चिन्ता है तो तुम अपने संबंधियों का एक - एक गांव में भेज दो और उनसे कहो कि वे वहीं जाकर रहें और गांव में मरे हुए पशुओं को उठाकर फेंके जिससे उन्हे ५०० रुपये का वार्षिक लाभ हो. इसके अलावा ऐसा करने पर उन्हें ५०० रुपये इनाम में मैं स्वयं दुंगा. इस प्रकार दूना लाभ होगा. इस मौके को क्यों छोडते हो? हमारा नुकसान होगा पर तुम्हे तो लाभ होगा. लेकिन आजतक कोई भी सवर्ण हिन्दू इस काम के लिए आगे नहीं आया. आखिर इनके पेट का पानी हमारी उन्नति को देखकर क्यों हिलता है? अपने लोगों के लिए अन्न, वस्त्र, मकान और जमीन के लिए उनकी देखभाल मैं स्वयं करुंगा. इसकी चिन्ता आप न करें.

इस काम को हमने किया तो लाभ होता है और आपने किया तो नुकसान होता है? उठाइये मरे हुए पशुओं को और लीजिए फायदा. इसी प्रकार कुछ लोगों का कहना है कि जब हमें विधानसभा में कुछ स्थान मिले है तो उन्हे हम क्यों छोड दें? मैं उनसे कहता हूं कि ब्राह्मण, राजपूत आदि को महार, चमार, भंगी बन कर उन स्थानों को भर लीजिए. हमारे स्थानों के खाली होने पर तुम्हे रोना क्यों आता है? मनुष्य को इज्जत प्यारी है. लाभ प्यारा नहीं होता. हम सम्मान के लिए संघर्ष कर रहे ळे.

बंबई में व्याभिचार करने का एक मोहल्ला है वहां की स्त्रियां सवेरे ८ बजे सोकर उठती ळे. सवेरे उठते ही ईरानी होटलों में काम करने वाले मुसलमान लडकोंको को बुलाकर कहती है. ``ओ सुलेमान! एक प्लेट खीमा और रोटी ले आ.'' वे खीमा और रोटी खाती है. चाय पीती है. पर हमारी औरतों को तो खीमा-रोटी खाने को नहीं मिलती. केवल चटनी और सुखी रोटी मिलती है.इसी पर वे संतुष्ट है. वे यदि चाहें तो ऐसी बेइज्जती की जिंदगी बिता सकती है, लेकिन उन्हे स्वाभिमान प्यारा है. इज्जत के लिए लड रहे है. मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है. इज्जत से रहना. इसकी पूर्ण प्राप्ति तक जितना अधिक हम आगे जा सकते है, उतना ही आगे जाने की हमारी तीव्र इच्छा है, इसके लिए हम जो कुछ भी त्याग करें वह थोडा हे. समाचार पत्र वाले गत चालीस वर्षों से मरे पीछे पडे हुए है. अब मैं उनसे कहना चाहता हूं कि भाइयो! अब आप कम सेकम समझदारी और गंभीर भाषा में बोलिए, हमें आज कुछ और बातों की भी आवश्यकता है. हम लोगों के बौद्ध बन जाने पर वह सब कुछ पूरी होनी चाहिए. मैं सभी कुछ दिलवाऊंगा. ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है. मेरे मरने के बाद क्या होगा इस संबंध में कुछ भी नही कह सकता? इस आंदोलन के लिए बहुत कुछ करना होगा. हमारे बौंद्ध धर्म स्वीकार करने पर बहुत कुछ होगा. आपत्तियां आने पर उनका निराकरण किस प्रकार करेंगे, कैसा युक्तियां देगी होंगी? इन सभी बातों पर आद्योपांत विचार मैंने किया है. इन बातों का जवाब देने के लिए मेरे पास काफी मसाला है. इन अधिकारों को अपने लोगों को मैंने ही दिलवाया हैं और में ही उन्हे दिलवाऊंगा. जिसने आपको इन अधिकारों को दिलवाया है वहीं इन अधिकारों को दिलवायेगा. इसलिए आप मेरे ऊपर पूर्ण विश्वास रखिये और जो कुछ में कह रहा हूं उस पर पूर्ण विश्वास रखकर चलिए, विरोधियों की आलोचना मे कुछ भी सच्चाई नही है. इसलिए उनकी भ्रामक बातों पर विचार भी न करे.

मुझे इस बात को देखकर बडा आश्चर्य होता है कि हमारी इस धर्म परिवर्तन की बाते सभी जगह हो रही है, लेकिन किसी ने मुझ से यह नहीं पूछा कि मैंने बुद्ध धर्म क्यो स्वीकार किया है? आखिरकार मैंने सभी धर्मो को छोडकर बुद्ध धर्म को ही क्यो अपनाया? धर्मांतर के किसी प्रकार के आंदोलन में यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है. धर्मांतर करते समय इस बात का विचार करना चाहिए कि किस धर्म को और क्यो कर अपनाया जाये? मैंने हिन्दू धर्म को त्याग करने का आंदोलन १९३५ में शुरु किया था और बराबर इस आंदोलन को चला रहा हूं. येवला (नासिक जिला) में इस आंदोलन को चलाने के लिए अप्रैल १९३५ मे बडा जलसा किया था और उसमें एक प्रस्ताव द्वारा हमने निर्णय किया था कि हम इस हिन्दू धर्म को छोडेंगे. मैंने उसी समय यह प्रतिज्ञा मैंने आज से २१ वर्ष पूर्व की थी और उसे आज पूरा कर दिखाया. इस धर्मांतर से मैं बडा ही खुश हुआ हूं और प्रफुल्लित हो उठा हूं. मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं नरक से छुटकारा पा गया हूं. मुझे कोई अन्धभक्त नहीं चाहिए. जो लोग बौध्द धर्म में आना चाहते हैं उन्हें खूब सोच समझकर आना चाहिए ताकि वे आगे इस धर्म में सुदृढ रह सकें.

मनुष्य मात्र की उन्नति के लिए धर्म की आवश्यकता है. मैं यह अच्छी तरह जानता हूं कि कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों से एक नया मत निकला हे. उनके कथनानुसार धर्म में कुछ भी नही है. उनके लिए धर्म का कोई महत्व नहीं है. उनका धर्म केवल यह है कि उन्हे प्रातःकाल मक्खन लगे हुए टोस्ट, दोपहर को खाने केलिए स्वादिष्ट भोजन, सोने के लिए अच्छा बिस्तरा और देखने के लिए सिनेमा चाहिए, यही उनका तत्वज्ञान है. में ऐसे तत्वज्ञान का हामी नहीं हूं. मेरे पिता की निर्धनता के कारण मुझे ऐसा कोई सुख नही मिला. अपने जीवन में जितना कष्ट मैंने सहन किया है; उतना किसी ने सहन नहीं किया होगा. इसलिए गरीबों का जीवन किस प्रकार कष्टमय होता है इसे में भली प्रकार से जानता हूं. आर्थिक दृष्टिकोण को सामने रखकर हमारा आंदोलन चलना चाहिए. इसलिए में आज तक अपने लोगों की आर्थिक और मानसिक उन्नति के लिए संघर्ष करता रहा हूं. यही नही बल्कि मानव-मात्र की आर्थिक उन्नति होनी चाहिए.

इस संबंध में मेरे अपने विचार है. पशुओं और मनुष्यों मे बडा अन्तर है. पशुओं को रोज खाने के लिए चारा चाहिए किन्तु मनुष्य के लिए अन्न चाहिए. पशुओं को चारे के सिवा कुछ और चीज की आवश्यकता नही होती; परंतु मनुष्य के शरीर के साथ मन भी है. इन दोनों बातों पर विचार करना चाहिए. मन का विकास होना जरुरी है. मन पवित्र और सुसंस्कत बनाना भी जरुरी है. जिन देशों के लोग यह समझते है कि खाने-पीने का सुसस्कृत मन के साथ कोई संबंध नहीहै, ऐसे देश और वहां की जनता से संबंध रखना मेरे लिए लाभदायक नहीं होगा. जनता से संबंध रखते हुए इस बात का भी विचार करना चाहिए कि जिस प्रकार शरीर निरोग होना चाहिए. उसी प्रकार शरीर को सुदृढ बनाने के लिए मन का भी सुसंस्कृत होना चाहिए, उसी प्रकार शरीर को सुदृढ बनाने के लिए मन का भी सुसंसकृत होना जरुरी है. अन्यथा यह कहना निरर्थक होगा की मनुष्य उन्नति कर रहा है.

मनुष्य का शरीर अथवा मन रोगी क्यों रहता है? इसका कारणयह है कि मनुष्य को जब तक शारीरिक पीडा रहती है तब तक

उसका मन प्रसन्न रही रहता. मन में उत्साह न हो तो अभ्युदय नहीं हो सकता. आखिर यह उत्साह क्यों नही रहता? उसका प्रथम कारण यह है कि मनुष्य को इस प्रकार विश्वास हो गया है कि उन्हे ऊपर उठने का अवसर नहीं मिल सकता. जब उसके पास आशा नहीं है तब उसके पास उत्साह के लिए स्थान कहां है? वह रोगी है. जिस मनुष्य को अपने कर्म का फल मिलता है, उसी को आनन्द मिलता है. स्कूलों में अगर मास्टर यह कहना शुरु कर दे कि यह कौन है? यह तो चमार है? यह चमार क्यों प्रथम वर्ग में परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ है? इसे प्रथम वर्ग किसलिए चाहिए? इसे चौथे वर्ग में उत्तीर्ण होना चाहिए प्रथम वर्ग में उत्तीर्ण होना केवल ब्राह्मणों का काम है. ऐसी परिस्थिति में उस चमार के छात्र को क्या उत्साह मिलेगा? उसकी तरक्की कैसी होगी? उत्साह निर्माण का मूल कारण तो मन है. जिसका शरीर और मन मजबूत होता है वह धैर्यवान होता है. ऐसे व्यक्ति के सामने कोई विपत्ति नहीं रहती. हर मुसीबत का मुकाबला करने का उसमें आत्म-विश्वास होता है. इसी से उसमें उत्साह पैदा होता है. हिन्दू धर्म का तत्वज्ञान ऐसी असमानता और ऐसे अन्यायपूर्ण सिद्धांतो पर आधारित है कि इस धर्म से किसी को कोई उत्साह आज तक नही मिला. अगर यह धर्म हजारों वर्ष तक भी रहा तो केवल इतना ही होगा कि पेट भरने के लिए कुछ बाबू पैदा होंगे, जो अपने पेट भरने के सिवाय कुछ भी नही कर सकेंगे. फिर ऐसे क्लर्को की रक्षा करने के लिए बडे क्लर्क की आवश्यकता होगी. आम अछूतों की भलाई कभी नही होगी.

मनुष्य के उत्साह का कारण अगर कोई है तो वह है मन. आप मिल के मालिकों को जानते है. वे मिलों में मैनेजर नियुक्त करते है. उनका काम मिल के मजदूरों से काम लेना होता है. वे मिल के मालिक किसी न किसी व्यसन में फंसे रहते है. क्योकि उनका मन स्वच्छ और सुसंस्कृत नही होता. अपने मन का विकास करने के लिए हमने आंदोलन किया. मैंने शिक्षा किस तरह प्राप्त की? मैं गरीबी के कारण लंगोटी लगाकर स्कूल जाता था. स्कूल में मुझे पीने के लिए पानी भी नहीं मिलता था. पानी के बगैर मैंने कई दिन बिताए. बम्बई नगर के एल्फिन्टसन् कालेज में भी यही अवस्था थी. ऐसी परिस्थिती अगर रही तो इससे दुसरी परिस्थिति क्या पैदा हो सकती है? गुलाम क्लर्क ही पैदा होंगे, तब अछूतों की भलाई क्या होगी?

ब्रिटिश राज्य में मैं देहली में एक्जीक्युटिव कौन्सिलर था. उस समय भारत के वाइसराय लार्ड लिनलिथगो थे. उनसे मैंने एक दिन कहा कि आप मुसलमानों के नाम पर अलीगढ विश्वविद्यालय को तीन लाख रुपये और हिन्दुओं के नाम पर बनारस विश्वविद्यालय को तीन लाख रुपये देते है. परन्तु हम न तो हिंदू है और न मुसलमान. अगर हमारे लिए कुछ करना चाहें तो हमारे लिए भी इससे कई गुना खर्च करना पडेगा. अगर इतना आप न कर सकें तो कम से कम मुसलमानों के लिए जितना आप करते है उतना ही हमारे लिए भी करे. इस संबंध में लिनलिथगो ने मुझे कहा कि मुझे जो कुछ भी उससे कहना है, मै उसे लिख कर दूं. उनके कथनानुसार मैंने इस संबंध में एक मेमोरिण्डम लिख कर उन्हकें दिया. यूरोपियन लोग काफी सहानुभूति रखने वाले होते थे. उन्होंने मेरे कथन को मान लिया. परन्तु इस पैसे को किस प्रकार खर्च किया जाये इसका निर्णय नहीं हो पाया. उनका

विचार था कि पैसे को हमारी अशिक्षित लडकियों पर खर्च किया जाये. उनके लिए बोर्डिंग खोले जायें और उसी पर यह पैसा खर्च किया जाय. अगर इस पैसे को इस प्रकार खर्च करके हमारी अशिक्षित लडकियों को शिक्षित किया गया तो उन्हे अच्छा खाना बनाने के लिए अच्छा-अच्छा सामान भी चाहिए, यह सामान कहाँ से आएगा? क्योंकि हमारी जनता अत्यंत गरीब है. हमारे लोग अपनी शिक्षित लडकियों की इच्छा पूरी करने के लिए पैसा कहां से लायेंगे? तब इस शिक्षा का परिणाम क्या होगा? अन्य सब बातों पर तो सरकार ने पैसा खर्च किया, लेकिन शिक्षा पर होने वाले खर्च को रोके रखा.

एक बार मैं लार्ड लिनलिथगो के पास गया और उनसे मैंने खुले दिल से शिक्षा संबंधी खर्चों पर बातें की. उनसे कहा कि अगर आप को गुस्सा न आए तो मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं. उन्हों ने काह ''हां ! पूछिए.'' मैंने पूछा कि क्या यह सच नहीं है कि मैं अकेला ५०० ग्रेजुयेटों के बराबर हूं. उन्होने कहा ''हां, मैं मानता हूं'' फिर मैंने उनसे पूछा कि इसका क्या कारण है? इस पर उन्होंने काह कि उन्हे मालूम नही. तब मैंने उनसे कहा कि उपनी मेहनत से प्राप्त की हुई मेरी विद्धता इतनी है कि मैं इस विद्धता के बल पर शासन के किसी भी पद पर बैठ सकता हूं. मुझे ऐसे ही विद्वान चाहिए. जो जिस प्रकार किले में निशाने पर बैठकर शत्रु को परास्त करते है, इसी प्रकार शासन के पदों पर बैठकर मेरे गरीब और निरीह लोगों की देखरेख कर सके. अगर हमारे लोगों की भलाई करनी है तो ऐसे ही लोगों को पैदा करना होगा. तभी इन अछूतों की भलाई हो सकेगी. केवल क्लर्कों के पैदा करने से क्या बनेगा? मेरे इस कथन को लार्ड लिनलिथगो ने माना और उसी वर्ष १६ विद्यार्थियों को उंची शिक्षा के लिए विलायत भेजा.

इस देश में हम हजारों वर्षो से बहुत ही निरुत्साही अवस्था में रहते चले आ रहे है. जब तक यह अवस्था रहेगी तब तक अपनी उन्नति के लिए हम में उत्साह होना असम्भव है. अन्याय और असमानता पर आधारित इस हिन्दू (ब्राम्हण) धर्म में रहकर हम कुछ भी नही कर सकते. मनुस्मृति में चातुर्वर्ण का कथन है. यह चातुर्वर्ण व्यवस्था मनुष्य मात्र की उन्नति के लिए महाघातक है. शूद्रों का काम केवल सेवा ही करना है. उन्हे शिक्षा से क्या तात्पर्य? इस समस्या का हल कौन करेगा? ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों को शुद्रों की गुलामी से हर प्रकार का फायदा है. शूद्रों के पास गुलामी के सिवा और है क्या? चातुर्वर्ण व्यवस्था फूंक मारने से उडाई नही जा सकती. यह केवल रुढि नही है बल्कि धर्म बन गई है.

हिन्दू धर्म में कोई समानता नही है. में एक बार गांधी जी से मिलने गया. गांधी जी ने मुझसे कहा कि वे चातुर्वर्ण को मानते है, लेकिन यह चातुर्वर्ण कौन सा और कैसा? इस बात को समझनेके लिए मैंने अपनी अंगुलियों को एक के ऊपर एक करके बताते हुए कहा कि यह चातुर्वर्ण सीधा है या उल्टा? इसका आदि और अन्त कहा है? गाधी जी इस बात का जवाब नही दे सके. जिन लोगों ने हमारा नाश किया है, उनका यह अन्यायपूर्ण धर्म इनके सामने ही नष्ट होगा. मैं हिन्दू धर्म पर बेकार ही आरोप नही लगाता. इस पापमयी धर्म में किसी का भी उद्धार नही हो सकता. यह धर्म नष्ट हो चुका है. इसमें कोई जान

नही है.

हमारा देश विदेशियों का गुलाम क्यों बना? योरोप में १९३९ से १९४५ तक दूसरा महायुद्ध हुआ. जितनी फौज लडाई में मरती थी उतनी फौज रोज भर्ती हो जाती थी, उस समय किसी ने यह नहीं कहा कि युद्ध जीतने का श्रेय किसी एक को ही प्राप्त है. यह सभी देशवासियों का महान श्रेय था. हमारे देश की बातें निराली रही है. क्षत्रिय मर गये कि सारा देश मर गया. यही होता रहा है. इसलिए देश कई बार गुलाम बना. अगर हम लोगों को शस्त्र धारण करने का अधिकार होता तो यह महान देश कभी भी गुलाम न बनता और न कोई इस देश को आक्रमण से जीत ही सकता था.

हिन्दू धर्म में रहकर किसी का उद्धार नहीं होगा. हिन्दू धर्म की रचना के अनुसार कुछ तथाकथित सवर्णों को सदियों से लाभ पहुंच रहा है. मेरे इस कथन में तिलमात्र भी झूठ नही है. शूद्रों और अछूतों की क्या भलाई हुई? ब्राह्मणों की औरत गर्भवती हुई की उसका ध्यान सीधा हाईकोर्ट की ओर जाता है कि वहां पर कोई जज का पद खाली है या नहीं? और जब हमारी औरत गर्भवती होती है तब उसका ध्यान इस बात की ओर जाता है कि कमेटी में कोई जगह झाडू देने वाले के लिए खाली है या नहीं? यह दुरावस्था हिन्दू धर्म की व्यवस्था के कारण ही है. इसमें रहकर हमारी क्या भलाई हो सकेगी. अगर हमारी भलाई होगी तो केवल बौद्ध धर्म में ही होगी.

भगवान के धर्म को ब्राह्मणों ने भी अपनाया और शुद्रों ने भी. उन सभी भिक्षुओं को आदेश देते हुए भगवान ने कहा था कि-

"हे भिक्षुओ! आप लोग कई देशों और कई जातियों से आए हुए है. जिस प्रकार आपके देशप्रदेश में अनेक नदियों बहती है और उनका अलग अस्तित्व दिखाई देता है. जब ये सागर में मिलती है तब अपने पृथक अस्तित्व को खो बैठती है.वे सब समुद्र मे समा जाती है. बौद्ध संघ समुद्र की ही भांति है. इस संघ में सभी एक है और सभी बराबर है. समुद्र में गंगा या यमुना के मिल जाने पर उसके पानी को अलग पहचानना कठिन है. इसी प्रकार आप लोगों के बौद्ध संघ में आने पर सभी एक है. सभी समान है. इस प्रकार की बाते कहने वाला एक ही महापुरुष हुआ है और वह महापुरुष भगवान बुद्ध है.

जब लोग मुझसे यह प्रश्न पूछते है कि धर्मांतर करने के लिए इतना समय क्यो लगाया? इतने दिन तक मैं क्या कर रहा था? ये प्रश्न महत्वपूर्ण है. धर्म के तत्वों को दूसरों को समझाना आसान काम नही है. एक मनुष्य का काम भी नही है. धर्म के संबंध में आप विचार करके देखेंगे तो मेरी बात आपकी समझ में आ जायेगी. आज मेरे ऊपर कितनी जिम्मेदारी है, उतनी संसार मे किसी पर नहीं है. अगर मैं ज्यादा साल जिवित रहा तो वह सब काम पूरा करके दिखाऊंगा.

(बाबा साहेब जिन्दाबाद के नारों से आकाश गूंज उठा)

कुछ लोग कहेंगे कि अछूतों के बौद्ध बनने पर क्या होगा? इस सबंध में मेरा इतना ही कहना है कि इस प्रकार का प्रश्न आप लोगों को नही पूछना चाहिए, क्योंकि ऐसे प्रश्न धूर्ततापूर्ण है. अमीर लोगों को धर्म की आवश्यकता नही है. उनमें जो लोग ऊंचे पदों पर है उनके पास रहने के लिए अच्छा बंगला है. उनकी सेवा करने के लिए उनके पास धन है. उनके पास नौकर-चाकर है और उनके पास सब कुछ है. ऐसे लोगों को धर्म को अपनाने या उस पर विचार करने की कोई आवश्यकता

नही है.

धर्म की आवश्यकता केवल गरीबों के लिए होती है. दुःखी और पीडित लोगों के लिए धर्म की जरुरत होती है. गरीब मनुष्य सदा ही आशा पर जीतिव रहता है. जीवन का मूल आशा में है. अगरयह आशा नष्ट हो गई तो जीवन कैसे चलेगा? धर्म हर एक को आशावादी बनाता है. गरीबों और पीडितों को सही संदेश देता है कि ``धबराने की कोई आवश्यकतों नही, क्योंकि जीवन आशादायक है और होगा.'' यही कारण है कि गरीब या पीडित व्यक्ति धर्म को चिपकाकर रखता है.

जब योरोप में ईसाई धर्म का प्रचार हुआ उस समय रोम के आसपास सभी देशों की अवस्था बडी खराब थी. लोगों को पेट भर खाना भी नही मिलता था. उस समय पेट भरने के लिए लोगों में खिचडी बांटी जाती थी. उस समय इन लोगों में ईसाई मत का प्रचार हुआ. दुःखी और पिडीत लोग इस धर्म के अनुयायी बने. श्री गिबन ने एक बार कहा था कि यह ईसाई धर्म भिखारियों का धर्म है. ईसाई धर्म यूरोप का धर्म बन गया है. इसका जवाब देने के लिए श्री गिबन आज जीवित नही है. अगर वे जीवित होते तो शायद अपनी बात का जवाब वे खुद ही पा लेते.

कुछ लोग यह अवश्य कहेंगे कि यह बौद्ध धर्म भंगी-चमारों का धर्म है. ब्राम्हण लोग भगवान को भी ``भो, गौतम!'' कहकर पुकारते थे. ब्राह्मण भगवान् को इस प्रकार अपशब्द कहकर चिढाया करते थे. लेकिन आप यह जानते है कि विदेशों में राम, कृष्ण और शंकर की मूर्तियों को खरीदने के लिए रखा जाय तो कोई नही खरीदेगी. अगर बुद्ध की मूर्ति रखी जाय तो एक भी मूर्ति नही बचेगी. भारत में जो होना था वह बहुत कुछ होता रहा. कुछ बाहर भी देखो. बाहर अगर किसी का नाम प्रसिद्ध है तो वह केवल भगवान बुद्ध का, फिर यह धर्म फैले बगैरे कैसे रहेगा?

हम अपने मार्ग से जरुर जायेंगे. वे अपनी राह से जाएं. हमें नया रास्ता मिला है. यह आशा का प्रतिक है. अभ्युदय और उत्कर्ष का महान मार्ग है. यह मार्ग नया नही है. इसे हम कहीं से लाए नही है. यह श्रेष्ठ मार्ग यहीं का है. यह भारतीय है. इस देश में २५०० वर्ष पूर्व भी बौद्ध धर्म था. इसका हमें दुःख है कि हमने इस धर्म को पहले ही क्यो नही अपनाया? भगवान बुद्ध के धर्म के तत्व सारे अजर अमर है, फिर भी बुद्ध ने अपने सिद्धांतों के अपरिवर्तनीय होने का दवा नही किया. इस धर्म में समयानुसार बदलनेकी शक्ति है. इतनी उदारता किसी अन्य धर्म मे नही है.

इस देश से बौद्ध धर्म के नाश का मुख्य कारण इस देश पर मुसलमानों का अमानवीय आक्रमण था. इस आक्रमण में हजारों मूर्तियों तोडी गई. भिक्षू मारे गए. इन आक्रमणों से घबरा कर बौद्ध भिक्षू दुसरे देशो मे भाग गऐ. कोई कहीं गया और कोई कही. इसका परिणाम यह हुआ कि यहां पर भिक्षुओं का अभाव हो गया. उत्तर पश्चिम प्रांत में एक ग्रीक राजा था. उसका नाम था मिलिन्द (मिनांडर) उसे धर्म चर्चा बडी पसंद थी, उसने हिन्दु धर्म शास्त्रों के पंडितों के साथ कई बार वाद-विवाद करके उन्हे हराया था. और कईयों को निरुत्तर कर दिया था. एक दिन उसने चाहा कि बौद्ध धर्म के विद्वानों के साथ वाद-विवाद करे. इसलिए अपने नौकरो को आदेश दिया कि जब कभी उनके राज्य में कोई बौद्ध धर्म का पंडित आए तो उसे उनके पास लाया जाए. तब स्थानीय बौद्ध मतावलाम्बियों ने महापंडित और धर्म-धुरन्धर भिक्षू नागसेन जी से प्रार्थना

की कि वे राजा के पास जाकर वाद-विवाद हुआ उस सबको पुस्तकाकार रुप में छापा गया है. मिलिन्द ने एक प्रश्न किया कि धर्म का ह्रास क्यों होता है? नागसेन ने इसका उत्तर देते हुए इसके तीन कारण बताए. पहला यह कि सच्चा धर्म ही सदा बना रहता है. जिस धर्म के मूल में गंभीरता नही होती वह धर्म केवल काल धर्म होता है और समय बीतने पर ऐसा धर्मा नही टिकता . दूसरा कारण यह होता है कि जब धर्म प्रचार करने वाले विद्वान ही नहीं रहते तब धर्म का ह्रास होता है, ज्ञानी लोगों को धर्म ज्ञान की चर्चा करनी ही चाहिए. विरोधियों के वाद-विवाद का खण्डन करने के लिए धर्म के प्रचारक न हों तो धर्म की ग्लानी होती है. तीसरा कारण यह है कि धर्म और धर्म के तत्व विद्वानां के लिए होते है. साधारण लोगों के लिए मंदिर या विहार होते है जहां पर जाकर जनता अपनी श्रेष्ठ विभूतियों की पूजा करती है.

आप लोगों को इस महान बौद्ध धर्म को स्वीकार करतेहुए इनबातों का ध्यान रखना चाहिए. बौद्ध धर्म के तत्व केवल कुछ समय के लिए है. ऐसा कभी नही समझना चाहिए. आज २५०० वर्षो के बाद भी बुद्ध तत्वों को सारा संसार मानता है. अमेरिका में बुद्ध धर्म के अनुयाईयों की २००० संस्थाएं है. इंग्लैंड में तीन लाख रुपये खर्च करके बौद्ध विहार बनाया गया है. जर्मनी में तीन चार हजार बौद्ध संस्थाएं है, बुद्ध तत्व अजर अमर है.फिर भी बुद्ध ने अपने तत्वों के महान होने का दावा नही किया, और न उन्होंने कभी यह कहा कि उनका धर्म ईश्वरीय है. भगवान ने तो यही कहा था कि मेरा पिता और मेरी माता दोनों सामान्य मनुष्यों की भांति है. जिन्हे वह धर्म अच्छा लगे वे इसे अपनाएं. क्योंकि इतनी उदारता की बातें आपको किसी दूसरे धर्म में नही मिलेंगी.

दूसरे धर्मों और बौद्ध धर्म में महान अंतर है बौद्ध धर्म की महान और मूल आधार की बातें आपको दूसरे धर्मो मे नही मिलेंगी क्योंकि दूसरे धर्म मनुष्य और ईश्वर के गहरेसंबंध को बताते है. दुसरे धर्म कहते है कि ईश्वर ने संसार की रचना की है.उसी ने ही आकाश. वायु, चन्द्र, सुरज और सब कुछ पैदा किया है. ईश्वर ने सब कुछ हमारे लिए कर दिया है. कुछ शेष नही रखा है. इसलिए हम ईश्वर की उपासना और भजन ही करते रहैं ईसाई धर्म अनुसार मरने के बाद एक निर्णय का दिन होगा, उसी के निर्णय अनुसार सब कुछ निर्धारित होगा.

ईश्वर और आत्मा के लिए बौद्ध धर्म में कोई स्थान नही है. भगवान बुद्ध ने कहा है कि संसार में सब जगह दुःख ही दुःख है. नब्बे प्रतिशत लोग दुखी हे. पीडित है. दुःख से पीडित गरीब लोगों का उद्धार करना ही बौद्ध धर्म का मुख्य ध्येय है. कार्ल मार्क्स ने भगवान बुद्ध से जादा कुछ नही कहा है. भगवान बुद्ध ने जो कुछ कहा है वह सब सरल और सीधा मार्ग है.

भाइयों और बहिनों! जो कुछ मुझे कहना था वह सब कुछमैंने कह दिया. यह धर्म सबसे अच्छा धर्म है. उसमें कोई दोष नही है. हिन्दू धर्म मे कुछ ऐसे तत्व है कि जिनसे किसी को उत्साह नही मिल सकता. हजारों वर्षों से लेकर आज तक अपने समाज में किसी को भी विद्वान नही बनने दिया गया. आप लोगों के सामने मुझे अपनी बचपन की बाते बताते हुए किसी प्रकार की झिझक नही होती. मेरे स्कूल में एक अब्राह्मण (मराठा) औरत थी. वह स्वयं अनपढ थी परन्तु मुझे कभी छूती

न थी.पोस्टमैन को मैं. ``मामा'' कहकर पुकारा करता था. स्कूल में एकदिन मुझे प्यास लगी. इसके लिए मैंने अपने मास्टर से कहा. मास्टर ने चपरासी को बुलाकर कहा हि इसे नल पर जाकरपानी पिला लाओ. चपरासी ने नल खोला तो मैंने पानी पिया. अगर कभी चपरासी न हुआ तो कई कई दिन तक पानी पीने को ही नही मिलता था. प्यासा ही घर वापस आता और घर पर ही आकर प्यास को बुझाता. जब मैं पढकर वापस आया तब मुझे डिस्ट्रक्ट जज बनने के लिए कहा गया. लेकिन इस रस्सी को मैंने अपने गले में इसिलए नही बंधवाया कि मेरे नौकर हो जाने पर मेरे लोगों की सेवा कौन करेगा? इसी विचार को ध्यान में रखते हुए में नौकरी के चक्कर में नही पडा.

व्यक्तिगत रुप से इस देश की किसी भी 'रुढि' या बात का विरोध करना मेरे लिए कठिन नही है. आप लोगों के सिर पर वैश्यों, क्षत्रियों और ब्राम्हणों ने पहाड खडा किया हुआ है. उसको किस प्रकार उलटा जाये या तोडा जाये यह एक वास्तविक प्रश्न है? इसलिए मैं चाहता हू. कि इस धर्म का पूर्ण ज्ञान कराऊं. यह मेरा कर्तव्य भी है. इस कार्य के लिए में पुस्तके लिखकर और आप लोगों की शंकाये दूर करके पूर्ण ज्ञान प्राप्त कराऊंगा.आज आप मुझ पर विश्वास रखकर चलिऐ.

आप पर अब काफी जिम्मेदारी आ पडी है. यह बडी भारी चीज है. आप लोगो को ऐसे काम करने चाहिएं जिससे सभी आपका आदर करें. आप इस धर्म को ऐसा न समझे कि आपने गलेमें एक मिट्टी का घडा बांध लिया है. बौद्ध धर्म की दृष्टि से भारत की भूमि अब सुनसान जंगल की भांति है. इसलिए आपका परम कर्तव्य है कि आप इस पवित्र धर्म को उत्तम रीति से पालने की प्रतिज्ञा करें, अन्यथा इस धर्म-परिवर्तन की निंदा होगी. आज आप सभी प्रतिज्ञा करें की आप सब बौद्ध न केवल अपना, बल्कि अपने साथ अपने देश का और इसके साथ-साथ सारे संसार का भी उद्धार करेंगे. संसार का उद्धार बौद्ध धर्म से ही होगा. संसार में जब तक न्याय को स्थान नहीं मिलेगा. तब तक शांति नही हो सकती.

यह नया काम बहुत जिम्मेदारी का काम है. इसे पुरा करने के लिए आपने दृढं संकल्प किया है. हमारे नौजवानों को बहुत कुछ करना है. इस बात को पूर्ण-रुप से आपको ध्यान में रखना चाहिए. आप लोग केवल पेट के ही पुजारी न बने. आप कम से कम अपनी आमदनी का २० वां भाग इस पवित्र धर्म प्रचार के लिए दान देने का निर्णय करें. मुझे आप सबको अपने साथ ले जाना है. तथागत ने पहले पहल कुछ ही लोगों को दीक्षा दी और उसी समय उनको आदेश दिया कि वे इस पवित्र धर्म का प्रचार करे. उसके बाद यश नामक एक विद्वान और ४० व्यक्तियों ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली. यश भी अमीर घराने के थे. इनसे भगवान ने कहा कि यह धर्म ``बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय लोगनुकम्पाय आदि कल्याणं, मध्य कल्याणं, पर्यवसान कल्याण्र अर्थात बहुत जनों के हित के लिए है, बहुत जनों के सुख के लिए है और सब लोगों पर अनुकम्पा के लिए है. यह आदि,मध्य और अन्तमें कल्याण कारक है.'' भगवान ने परिस्थिती के अनुसार धर्म-प्रचार के ढंग को अपनायां. अब हमें भी अपने समयानुसार इस धर्म की दीक्षा स्वयं लेनी होगी. इस बात की मैं पूर्ण घोषणा करता हूं कि बौद्ध धर्मानुयायी प्रत्येक व्यक्ति को दूसरों को भी त्रिशरण पंचवीस एवं २२ प्रतिज्ञाओं सहित बौद्ध धर्म में दीक्षित करने का पूर्ण अधिकार है. ●●●

बौद्धों की २२ - प्रतिज्ञाएं

१. मैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश को कभी ईश्वर नही मानूंगा और न मैं उनकी पूजा करुंगा.

२. मैं राम और कृष्ण को ईश्वर नही मानूंगा और उनकी पूजा कभी नहीं करुंगा.

३. मैं गौरी, गणपति, इत्यादि हिन्दू धर्म के किसी भी देवी देवताओं को नहीं मानूंगा और न ही उनकी पूजा करुंगा.

४. मैं ईश्वर ने कभी अवतार लिया है इस पर विश्वास नही करुगा.

५. मैं भगवान बुद्ध विष्णु का अवतार है इसे कभी नही मानुंगा. मैं ऐसे प्रचार को पागलपने और झुठा प्रचार समझता हूं.

६. मैं श्राद्ध कभी नही करुंगा और न ही कभी पिंडदान दूंगा.

७. मैं बौद्ध धर्म के विरुद्ध किसी भी बात को नही करुंगा.

८. मै कोई भी क्रिया कर्म ब्राह्मणों के हाथों से नही कराऊंगा.

९. मैं सभी मनुष्य एक है. इस सिद्धांत को मानूंगा.

१०. मै समानता की स्थापना के लिए प्रयत्न करुंगा.

११. मैं भगवान बुद्ध के अष्टांग मार्ग का पूर्ण पालन करुंगा.

१२. मैं भगवान बुद्ध के बताए हुए दस पारमिताओं का पूर्ण पालन करुंगा.

१३. मैं प्राणी मात्र पर दया रखूंगा और उनका लालन -पालन करुंगा.

१४. मै चोरी नही करुंगा.

१५. मै झूठ नही बोलुंगा.

१६. मैं व्याभिचार नही करुंगा.

१७. मैं शराब नही पीऊंगा.

१८. मैं अपने जीवन को बौद्ध धर्म के तीन तत्व अर्थात ज्ञान, शील और करुणा पर ढालने का प्रयत्न करुंगा.

१९. मैं मनुष्य मात्र के उत्कर्ष के लिए हानिकारक और मनुष्य मात्र को असमान और नीच मानने वाले अपने पुराने हिन्दू धर्म का पुरी तरह त्याग करता हूं और बुद्ध धर्म को स्वीकार करता हूं.

२०. मेरा ऐसा पूर्ण विश्वास है कि बौद्ध धर्म ही सद्धर्म है.

२१. मै यह मानता हूं कि मेरा पुनर्जन्म हो रहा है.

२२. मैं यह पवित्र प्रतिज्ञा करता हूं कि आज से मैं बौद्ध धर्म की शिक्षा के अनुसार आचरण करुंगा.